IJAER/ March-April 2020/Volume-9/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार

अपराजिता शांडिल्य

शोधार्थी कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर

डॉ अजय कुमार शुक्ल

प्राध्यापक हिन्दी कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर

सार

आधुनिक युग के प्रारंभिक दशकों में, अंग्रेजी उपन्यास महत्त्वपूर्ण उपन्यास लेखकों जैसे चार्ल्स डिकेंस, जेन ऑस्टिन, और भ्रम स्टोकर द्वारा लिखे गए उत्कृष्ट कामों के बारे में जाना जाता है। इन उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक मुद्दों को व्यापक रूप से परिदृश्य में लाया गया था। वे समाज के विभिन्न पहलुओं पर नजर रखते हुए मनोवैज्ञानिक तथ्यों का उपयोग करते थे। आधुनिक हिन्दी उपन्यास की शुरुआत प्रारंभिक 20वीं शताब्दी में हुई, जब हिन्दी साहित्य के नए धाराओं का उदय हुआ। मुंशी प्रेमचंद, जैनेन्द्र कुमार, और साहित्यिक अभिनव ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की समस्याओं, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक अंदरूनी जीवन, और राष्ट्रीय और सामाजिक मुद्दों को उजागर किया। उनके उपन्यासों में व्यापक व्यक्तित्व विकास, प्रेम और विवाह, और समजिक असामान्यताओं के मुद्दे उठाए गए थे। आधुनिक युग में हिन्दी और अंग्रेजी के उपन्यासों में एक अंकुरण हुआ है,

मुख्य शब्दरू

परिचय

आर के नारायण (अक्टूबर 10, 1906– मई 13, 2001) का पूरा नाम रासीपुरम कृष्णस्वामी एय्यर नारायण स्वामी था। नारायण अंग्रेजी साहित्य के सबसे महान उपन्यासकारों में गिने जाते हैं। उन्होंने दक्षिण भारत के काल्पनिक शहर मालगुड़ी को आधार बनाकर अपनी रचनाएं की। आर के नारायण मौसूर के यादव गिरी में करीब दो दशक तक रहे...1990 में बीमारी की वजह से वो चेन्नई शिफ्ट कर गये थे. जिस मकान में नारायण रहते थे, वो मकान आज भी हैं. 2006 में आर के नारायण के जन्मशति पर नारायण के चाहने और लेखक समुदाय मौसूर स्थित घर पर पहुंचा था.

सब की राय थी कि मैसूर वाले घर विरासत के रूप में सहेजा...लेकिन मशविरा सिर्फ कागत तक ही सीमित रहा...कभी अमली जामा नहीं पहनाया जा सके...अलबत्ता अब उस घर को गिरा कर वहां मल्टी स्टोरे बिल्डिंग बनाने की योजना है। गाइड अंग्रेजी भाषा के महान भारतीय उपन्यासकार आर के नारायण का सुप्रसिद्ध उपन्यास है। यह आर के नारायण का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है जिसे देश और विदेशों में जबरदस्त सराहना

मिली है। उनकी अधिकतर रचनाओं की तरह गाइड पर मालगुड़ी पर आधारित है। मालगुड़ी दक्षिण भारत का एक काल्पनिक स्थान है। इस उपन्यास में राजू नामक एक सामान्य पथप्रदर्शक (टूर गाइड) के आध्यात्मिक गुरू बनने की कहानी है।

आर. के. नारायण का जन्म 10 अक्टूबर, 1906 ई. को मद्रास (वर्तमान चेन्नई), भारत में हुआ था और इनकी मृत्यु 13 मई, 2001 में हुई। आर. के. नारायण अपनी पीढ़ी के अंग्रेजी में लिखने वाले उत्कृष्ट भारतीय लेखकों में से एक थे। अपनी दादी द्वारा पालित–पोषित नारायण ने 1930 में अपनी शिक्षा पूरी की और पूर्णतरू लेखन में जुट जाने का निर्णय लेने से पहले कुछ समय तक शिक्षक के रूप में काम किया।

उद्देश्य

1. आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार कृतित्व का अध्ययन
2. आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार व्यक्तित्व का अध्ययन

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार 'मुकुल राज आनंद'

मुलक राज आनंद एक भारतीय लेखक थे, जो परंपरागत भारतीय समाज में गरीब जातियों के जीवन के चित्रण के लिए उल्लेखनीय थे। इंडो–एंग्लियन कथाओं के अग्रदूतों में से एक, वह, आर के नारायण, अहमद अली और राजा राव के साथ, अंतरराष्ट्रीय पाठकों को प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी में भारत के पहले लेखकों में से एक थे। आनंद को उनके उपन्यासों और लघु कथाओं के लिए प्रशंसा की जाती है, जिन्होंने आधुनिक भारतीय अंग्रेजी साहित्य के क्लासिक कामों की स्थिति हासिल की है, जो पीड़ितों के जीवन में उनकी समझदार अंतर्दृष्टि और गरीबी के उनके विश्लेषण, शोषण और दुर्भाग्य के विश्लेषण के लिए उल्लेखनीय हैं। वह अंग्रेजी में पंजाबी और हिंदुस्तान मुहावरे को शामिल करने वाले पहले लेखकों में से एक होने के लिए भी उल्लेखनीय है और पद्म भूषण के नागरिक सम्मान प्राप्तकर्ता थे।

यह एक विडंबना है कि उन्होंने अपने परिवार की समस्याओं के कारण साहित्यिक कैरियर की शुरुआत की थी। उनका पहला निबंध उनकी चाची की आत्महत्या की प्रतिक्रिया से संबंधित था, जिसे उनके परिवार द्वारा मुसलमान के साथ भोजन साझा करने के कारण बहिष्कृत किया गया था। उनका पहला उपन्यास "अनटचेबल" वर्ष 1935 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने भारत की "अछूत" समस्या का बेबाक चित्रण किया था।

उनका दूसरा उपन्यास "कुली" एक बाल श्रमिक के रूप में काम कर रहे 15 वर्षीय लड़के पर आधारित था, जो तपेदिक से ग्रस्त होने के कारण मर जाता है। मुल्कराज आनंद ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया था और स्पेनिश नागरिक युद्ध में गणतंत्रवादियों के साथ लड़े थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, उन्होंने लंदन में बीबीसी के लिए एक पटकथा लेखक के रूप में काम किया था, जहाँ वह जॉर्ज ऑरवेल के मित्र बन गए थे।

कुली अन्तर्राष्टीय ख्याति के भारतीय लेखक डॉं मुल्कराज का युगान्तकारी उपन्यास है,जो अपने प्रथम प्रकाशन के कोई 60–65 साल बाद भी प्रांसगिक बना हुआ है। यह हिमाचल प्रदेश के कॉंगड़ा इलाके के एक ऐसे अनाथ और विपन्न किशोर को केन्द्र में रखकर लिखा गया है, जिसे पेट भरने के लिए मुम्बई जैसे महानगर की खाक छाननी पड़ी, गलाजत की जिन्दगी जीनी पड़ी और तब भी वह दो दानों का मोहताज बना रहा।

क्षयग्रस्त शरीर के बावजूद परिस्थितियॉं उसे हाथ–रिक्शा खींचने वाले कुली का पेशा करने को मजबूर कर देती हैं। तब भी क्या मुन्नू नाम का वह अनाथ–विपन्न किशोर भूख और दुर्भाग्य को पछाड़ने में कामयाब हो पाया। स्थान काल–पात्रों की दृष्टि से बहुत विस्तृत फलक पर रचा गया यह उपन्यास यद्यपि ब्रिटिश भारत में घटित होता है,किन्तु अभावग्रस्त ग्रामीण जीवन को जिन सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों से टकराते–जूझते यहॉं दिखाया गया है वे पहले की तुलना में आज और अधिक गम्भीर और अधिक जटिल हुई हैं।

साहित्य जगत में मुल्कराज आनंद का नाम हुआ उनके उपन्यास अनटचेबल्स से जिसमें उन्होंने भारत में अछूत समस्या पर बारीक और ठोस चित्रण किया। अनटचेबल्स की भूमिका लिखी थी प्रख्यात अंग्रेजी लेखक ई एम फोर्स्टर ने। अपने अगले उपन्यासों कुली, टू लीव्स एंड अ बड, द विलेज, अक्रॉस द ब्लैक वाटर्स और द सोर्ड एंड द सिकल में भी उन्होंने पीड़ितों की व्यथा को उकेरा। भारत की आजादी के लिए जारी संघर्ष से प्रभावित होकर मुल्कराज आनंद 1946 में भारत लौट गए।

पेशावर में 12 दिसंबर 1905 को पैदा हुए आनंद अमृतसर के खालसा कॉलेज से पढ़ाई करने के बाद इंग्लैंड चले गए और कैम्ब्रिज तथा लंदन विश्वविद्यालय में पढ़ाई की। पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने लीग ऑफ नेशंस स्कूल ऑफ इंटेलेक्चुअल को–ऑपरेशन जिनेवा में अध्यापन किया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद वे भारत लौट आए और तत्कालीन बंबई में स्थायी रूप से रहने लगे। 1948 से 1966 तक उन्होंने देश के कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया। बाद में वे ललित कला अकादमी और लोकायत ट्रस्ट से भी जुड़े। 28 दिसंबर 2004 में पुणे में उनका निधन हो गया। वे अंतिम समय तक सक्रिय रहे और साहित्य सृजन और समाज सेवा करते रहे।

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार 'अरविंद अडिगा'

अरविंद अडिगा का जन्म 23 अक्टूबर 1974 को मद्रास (अब चेन्नई) में डॉ. के. माधव अडिगा और उषा अडिगा के घर हुआ था, दोनों मैंगलोर से थे। उनके दादा स्वर्गीय के. सूर्यनारायण अडिगा, कर्नाटक बैंक के पूर्व अध्यक्ष और उनके परदादा, यू. रामा राव, मद्रास के एक लोकप्रिय चिकित्सक और कांग्रेस राजनीतिज्ञ थे। अडिगा मैंगलोर में पले–बढ़े और केनरा हाई स्कूल, फिर सेंट एलॉयसियस कॉलेज में पढ़ाई की, जहां उन्होंने 1990 में एसएसएलसी पूरा किया और एसएसएलसी में अपने राज्य में पहला स्थान हासिल किया (उनके बड़े भाई, आनंद ने एसएसएलसी में दूसरा और पहला स्थान हासिल किया था) राज्य में पीयूसी में)। अपने परिवार के साथ सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में प्रवास करने के बाद, अरविंद ने जेम्स रुस एग्रीकल्चरल हाई

स्कूल में अध्ययन किया। बाद में उन्होंने न्यूयॉर्क शहर में कोलंबिया विश्वविद्यालय के कोलंबिया कॉलेज में साइमन शामा के तहत अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया और 1997 में सैल्यूटेटेरियन के रूप में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने ऑक्सफोर्ड के मैग्डलेन कॉलेज में भी अध्ययन किया, जहां उनके शिक्षकों में से एक हरमाइन ली थे।

अरविंद अडिगा ने अपने पत्रकारिता करियर की शुरुआत फाइनेंशियल टाइम्स में इंटर्नशिप करते हुए एक वित्तीय पत्रकार के रूप में की थी। फाइनेंशियल टाइम्स और मनी में प्रकाशित अंशों के साथ, उन्होंने स्टॉक मार्केट और निवेश को कवर किया, अन्य लोगों के अलावा, डोनाल्ड ट्रम्प का साक्षात्कार भी लिया। पिछले बुकर पुरस्कार विजेता पीटर कैरी की पुस्तक, ऑस्कर और लुसिंडा की उनकी समीक्षा, एक ऑनलाइन साहित्यिक समीक्षा, द सेकेंड सर्कल में दिखाई दी। बाद में उन्हें ज्डम्‍ द्वारा काम पर रखा गया, जहां वे फ्रीलांस होने से पहले तीन साल तक दक्षिण एशिया संवाददाता बने रहे। इस फ्रीलांस अवधि के दौरान, उन्होंने द व्हाइट टाइगर लिखा। अरविंद अडिगा अब मुंबई, महाराष्ट्र, भारत में रहते हैं।

अरविंद अडिगा के पहले उपन्यास, द व्हाइट टाइगर ने 2008 का बुकर पुरस्कार जीता। वह सलमान रुश्दी, अरुंधति रॉय और किरण देसाई के बाद यह पुरस्कार जीतने वाले चौथे भारतीय मूल के लेखक हैं। (वी.एस. नायपॉल, एक अन्य विजेता, जातीय रूप से भारतीय हैं लेकिन उनका जन्म कैरेबियाई द्वीप त्रिनिदाद में हुआ था।) शॉर्टलिस्ट में शामिल पांच अन्य लेखकों में एक अन्य भारतीय लेखक (अमिताव घोष) और एक अन्य पहली बार के लेखक (स्टीव टॉल्ट्ज) शामिल थे। उपन्यास एक आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था के रूप में भारत के उदय और मुख्य पात्र, बलराम, जो ग्रामीण गरीबी को कुचलने से आता है, के बीच विरोधाभास का अध्ययन करता है।

अडिगा ने बताया कि 19वीं सदी के फ्लौबर्ट, बाल्जाक और डिकेंस जैसे लेखकों की आलोचना ने इंग्लैंड और फ्रांस को बेहतर समाज बनने में मदद की। पुरस्कार जीतने के कुछ ही समय बाद, यह आरोप लगाया गया कि अडिगा ने पिछले वर्ष, उस एजेंट को बर्खास्त कर दिया था जिसने 2007 के लंदन पुस्तक मेले में अटलांटिक बुक्स के साथ उसका अनुबंध सुरक्षित किया था। अप्रैल 2009 में, यह घोषणा की गई कि उपन्यास को एक फीचर फिल्म में रूपांतरित किया जाएगा। मुख्य रूप से बुकर पुरस्कार की जीत से प्रेरित होकर, द व्हाइट टाइगर के भारतीय हार्डकवर संस्करण की 200,000 से अधिक प्रतियां बिकीं।

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार 'चेतन भगत'

चेतन भगत एक प्रसिद्ध भारतीय लेखक हैं जिन्होंने ऐसे उपन्यास लिखे जो बाजार में बड़ी सफलता के साथ आए। ये सभी अपनी रिलीज के बाद से बेस्टसेलर रहीं और इन्हें प्रसिद्ध बॉलीवुड निर्देशकों द्वारा फिल्माया गया है। चेतन भगत को सिर्फ एक लेखक के बजाय एक युवा आइकन माना जाता है। कहानियों को चित्रित करने के अपने जीवंत और विनोदी तरीके से, उन्होंने कई युवा भारतीयों में पढ़ने की आदत को प्रेरित किया

है। वह एक अच्छे स्तंभकार भी हैं और कई प्रमुख अखबारों के लिए कॉलम लिखते हैं। उनके अनुसार, उपन्यास मनोरंजन के साधन हैं जिसके माध्यम से वह समाज और युवाओं के बारे में अपने विचार और राय व्यक्त करते हैं। विकास के मुद्दों और राष्ट्रीय मुद्दों को कॉलम के माध्यम से संबोधित किया जाता है। चेतन के कॉलम इस तरह से लिखे गए हैं जो सीधे तौर पर हमारे देश के मुद्दों को उजागर करते हैं और कई बार तो संसद में भी इस पर चर्चा शुरू हो गई है। वह न केवल एक अच्छे लेखक हैं बल्कि एक प्रेरक वक्ता भी हैं और उन्होंने कई कॉलेजों, संगठनों और कंपनियों में कई प्रेरक भाषण दिए हैं।

व्यक्तिगत जीवन

चेतन भगत का जन्म 22 अप्रैल 1974 को नई दिल्ली में एक मध्यम वर्गीय पंजाबी परिवार में हुआ था। उनके पिता एक आर्मी मैन थे और उनकी माँ एक सरकारी कर्मचारी थीं। उनकी शिक्षा का अधिकांश भाग दिल्ली में हुआ। उन्होंने वर्ष 1978 से 199 के दौरान आर्मी पब्लिक स्कूल, धौला कुआँ, नई दिल्ली में अध्ययन किया जिसके बाद उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली में मैकेनिकल इंजीनियरिंग करने का फैसला किया। इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद उन्होंने भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), अहमदाबाद में प्रस्तावित प्रबंधन कार्यक्रम में दाखिला लिया। एक उत्कृष्ट छात्र होने के नाते, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी जब उन्हें आईआईएम अहमदाबाद द्वारा अपने बैच के ष्सर्वश्रेष्ठ आउटगोइंग छात्रष के रूप में मान्यता दी गई थी।

बाद में उन्होंने 1998 में अनुषा सूर्यनारायणन से शादी कर लीय वह प्प्ड–। में उनकी साथी छात्रा थी। इसके बाद चेतन अपने परिवार के साथ हांगकांग चले गए और गोल्डमैन सैक्स के साथ एक निवेश बैंकर के रूप में काम किया। उन्होंने ग्यारह साल तक हांगकांग में काम किया और फिर मुंबई आकर लिखना शुरू कर दिया। यह उनका जुनून था. उनके नाम पर चार उपन्यास हैंरू फाइव प्वाइंट समवन (2004), वन नाइट / द कॉल सेंटर (2005), द थ्री मिस्टेक्स ऑफ माई लाइफ (2008) और टू स्टेट्स (2009)। संयोग से या पसंद से, उनके सभी उपन्यासों के शीर्षकों के साथ संख्याएँ जुड़ी हुई थीं। अब वह अपनी पत्नी और जुड़वां बेटों ईशान और श्याम के साथ एक खुशहाल जीवन जीते हैं। चेतन को सुपर हीरो बनने की चाहत रखने वाले अपने बच्चों के साथ कार्टून देखकर सादा जीवन जीना पसंद है। वह स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व्यक्ति हैं और नियमित रूप से योगाभ्यास करते हैं।

चेतन भगत ने अपना पहला उपन्यास पहला उपन्यास श्फाइव पॉइंट समवनश 2004 में प्रकाशित किया और इस पहले उद्यम ने उन्हें प्रसिद्धि और लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया। किताब में एक आईआईटी छात्र की कहानी दिखाई गई है जो खुद को आईआईटी के अन्य सभी छात्रों की तुलना में औसत से नीचे मानता है। इस पुस्तक ने सोसाइटी यंग अचीवर्स अवार्ड और पब्लिशर्स रिकॉग्निशन अवार्ड जीता। इस कहानी को राजकुमार हिरानी द्वारा निर्देशित एक फिल्म में अपनाया गया और इसमें आमिर खान, माधवन, शरमन जोशी और करीना कपूर जैसे प्रसिद्ध बॉलीवुड सितारों ने अभिनय किया। उनकी दूसरी किताब श्वन नाइट

एट ए कॉल सेंटरश थी और यह भी काफी सफल रही। इस किताब पर फिल्म बनी और उसका नाम श्हैलोश रखा गया और चेतन ने ही इसकी पटकथा लिखी। यह फिल्म बॉलीवुड स्टार सलमान खान की विशेष उपस्थिति के कारण चर्चित रही और औसत हिट रही। उनके अगले उपन्यास का मुख्य विषय क्रिकेट है। इसे श्थ्री मिस्टेक्स ऑफ माई लाइफश नाम दिया गया है। उनकी चौथी किताब का नाम श्टू स्टेट्सश है।

योगदान

मनोरंजन के क्षेत्र में चेतन भगत का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा को कभी भी केवल उपन्यास लिखने तक ही सीमित नहीं रखा। एक जिम्मेदार सामाजिक व्यक्ति के रूप में, वह विभिन्न सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों का हवाला देते हुए समाचार पत्रों में कॉलम भी लिखते हैं। उनके कई स्तंभों पर सांसदों का ध्यान गया और भारतीय संसद में गंभीर चर्चा शुरू हुई। उन्होंने सोनिया गांधी को एक प्रारंभिक पत्र भेजकर भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को संबोधित किया है और बाबा रामदेव से जुड़े राजनीतिक मुद्दों के बारे में भी बात की है।

पुरस्कार एवं सम्मान

उन्होंने 2000 में सोसाइटी यंग अचीवर्स अवार्ड और 2005 में पब्लिशर्स रिकॉग्निशन अवार्ड जीता। चेतन भगत ने वर्ष 2010 में टाइम पत्रिका की ष्विश्व के 100 सबसे प्रभावशाली लोगोंष की सूची में भी जगह बनाई।

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार 'शशि थरूर'

शशि थरूर (जन्म 9 मार्च 1956, लंदन, इंग्लैंड में) एक भारतीय पूर्व अंतर्राष्ट्रीय सिविल सेवक, राजनयिक, नौकरशाह, राजनीतिज्ञ, लेखक और सार्वजनिक बुद्धिजीवी हैं, जो 2009 से तिरुवनंतपुरम, केरल के लिए संसद सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। वह अध्यक्ष हैं रसायन और उर्वरक पर स्थायी समिति की। वह पूर्व में संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव थे और 2006 में महासचिव पद के लिए असफल रूप से दौड़े थे। ऑल इंडिया प्रोफेशनल्स कांग्रेस के संस्थापक अध्यक्ष, उन्होंने पूर्व में विदेश मामलों और सूचना प्रौद्योगिकी पर संसदीय स्थायी समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया था। .

ब्रिटेन के लंदन में जन्मे और भारत में पले–बढ़े थरूर ने दुनिया भर में काम किया, 1975 में सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और 1978 में फ्लेचर स्कूल ऑफ लॉ एंड डिप्लोमेसी टफ्ट्स यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और मामलों में डॉक्टरेट की उपाधि के साथ अपनी पढ़ाई पूरी की। 22 साल की उम्र में फ्लेचर स्कूल से ऐसा सम्मान पाने वाले वह उस समय के सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे। 1978 से 2007 तक, थरूर संयुक्त राष्ट्र में एक कैरियर अधिकारी थे, 2001 में संचार और सार्वजनिक

सूचना के लिए अवर महासचिव के पद तक पहुंचे। उन्होंने 2006 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव के लिए बान की मून के चयन में दूसरे स्थान पर रहने के बाद अपनी सेवानिवृत्ति की घोषणा की।

2009 में, थरूर ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होकर अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की और लोकसभा चुनाव में जीतकर तिरुवनंतपुरम, केरल से पार्टी का सफलतापूर्वक प्रतिनिधित्व किया और तीन बार संसद सदस्य बने। कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के दौरान, थरूर ने विदेश राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया। गांधी परिवार के गैर–वफादार, थरूर को 2022 में पार्टी अध्यक्ष चुने जाने के लिए मल्लिकार्जुन खड़गे ने हराया था। वह वर्तमान में कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य हैं, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता, थरूर ने 1981 से फिक्शन और नॉन–फिक्शन की कई रचनाएँ लिखी हैं। अंग्रेजी भाषा पर अपनी पकड़ के लिए लोकप्रिय, थरूर नरेंद्र मोदी से आगे निकलने से पहले ट्विटर पर सबसे ज्यादा फॉलो किए जाने वाले भारतीय थे।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

शशि थरूर का जन्म 9 मार्च 1956 को लंदन, यूनाइटेड किंगडम में केरल के पलक्कड़ के एक मलयाली जोड़े चंद्रन थरूर और सुलेखा मेनन के घर हुआ था। थरूर की दो छोटी बहनें शोभा और स्मिता हैं। शशि के दादा का नाम चिप्पुकुट्टी नायर था। शशि के चाचा परमेश्वरन थरूर थे, जो भारत में रीडर्स डाइजेस्ट के संस्थापक थे।

मूल रूप से केरल के रहने वाले थरूर के पिता ने लंदन, बॉम्बे, कलकत्ता और दिल्ली में विभिन्न पदों पर काम किया, जिसमें द स्टेट्समैन के लिए 25 साल का करियर (समूह विज्ञापन प्रबंधक के रूप में समापन) भी शामिल था। जब थरूर 2 साल के थे, तब उनके माता–पिता भारत लौट आए, जहां उन्होंने 1962 में मोंटफोर्ट स्कूल, यरकौड में दाखिला लिया, बाद में बॉम्बे (अब मुंबई) चले गए और कैंपियन स्कूल (1963–68) में पढ़ाई की।

1975 में, थरूर ने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफंस कॉलेज से इतिहास में कला स्नातक की डिग्री के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की, जहां वे छात्र संघ के अध्यक्ष रहे और सेंट स्टीफंस क्विज क्लब की स्थापना भी की। उसी वर्ष, थरूर मेडफोर्ड में टफ्ट्स विश्वविद्यालय के फ्लेचर स्कूल ऑफ लॉ एंड डिप्लोमेसी में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एम.ए. प्राप्त करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका गए। 1976 में एम.ए. प्राप्त करने के बाद, थरूर ने 1977 में कानून और कूटनीति में मास्टर ऑफ आर्ट्स और अपनी पीएच.डी. प्राप्त की। 1978 में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और मामलों में। जब थरूर डॉक्टरेट की पढ़ाई कर रहे थे, तब उन्हें सर्वश्रेष्ठ छात्र के लिए रॉबर्ट बी. स्टीवर्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और वह फ्लेचर फोरम ऑफ इंटरनेशनल

अफेयर्स के पहले संपादक भी थे। 22 साल की उम्र में, वह फ्लेचर स्कूल के इतिहास में डॉक्टरेट प्राप्त करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे।

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार 'राजा राव'

राजा राव, (जन्म 8 नवंबर, 1908, हसन, मैसूर, भारत–मृत्यु 8 जुलाई, 2006, ऑस्टिन, टेक्सास, यू.एस.), लेखक जो 20वीं सदी के मध्य दशकों के दौरान अंग्रेजी में लिखने वाले सबसे महत्वपूर्ण भारतीय उपन्यासकारों में से एक थे।

दक्षिणी भारत के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार से आने वाले राव ने निजाम कॉलेज, हैदराबाद और फिर मद्रास विश्वविद्यालय में अंग्रेजी का अध्ययन किया, जहां उन्होंने 1929 में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। वह विश्वविद्यालय में साहित्य और इतिहास का अध्ययन करने के लिए फ्रांस चले गए।

मोंटपेलियर और सोरबोन। इसके अलावा फ्रांस में रहते हुए उन्होंने 1931 में केमिली मौली से शादी की। वह 1933 में भारत लौट आए – उसी वर्ष, जब यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में, उनकी कुछ शुरुआती लघु कथाएँ प्रकाशित हुईं – और अगला दशक उन्होंने आश्रमों में घूमते हुए बिताया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया और अंग्रेजों के खिलाफ भूमिगत गतिविधियों में लगे रहे। रोआ 1948 में फ्रांस लौट आए और बाद में भारत और यूरोप के बीच समय बदलते रहे। उन्होंने पहली बार 1950 में संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा किया और 1966 में वे ऑस्टिन में टेक्सास विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर बन गए, हालांकि उन्होंने व्यापक रूप से यात्रा करना जारी रखा। वह सेवानिवृत्त हो गए और 1980 में उन्हें प्रोफेसर एमेरिटस नामित किया गया। उनकी पहली शादी 1949 में समाप्त हो गई, उन्होंने दो बार और शादी की, 1965 में (कैथरीन जोन्स से) और 1986 में (सुसान वॉट से)।

फ्रांस में अध्ययन के दौरान राव ने अपनी कुछ प्रारंभिक लघु कहानियाँ कन्नड़ में लिखींय उन्होंने फ्रेंच और अंग्रेजी में भी लिखा। उन्होंने अपनी प्रमुख रचनाएँ अंग्रेजी में लिखीं। 1930 के दशक की उनकी लघु कहानियाँ द काउ ऑफ द बैरिकेड्स, एंड अदर स्टोरीज (1947) में एकत्र की गईं। उन कहानियों की तरह, उनका पहला उपन्यास, कंथापुरा (1938), काफी हद तक यथार्थवादी शैली में है। इसमें दक्षिणी भारत के एक गाँव और उसके निवासियों का वर्णन है। अपने कथावाचक, गाँव की वृद्ध महिलाओं में से एक के माध्यम से, उपन्यास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभावों की पड़ताल करता है। कंथापुरा राव का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, खासकर भारत के बाहर।

उनके बाद के उपन्यासों ने व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित किया और 1988 तक एक आलोचक ने कहा कि राव की ष्सबसे बड़ी उपलब्धि आध्यात्मिक उपन्यास की पूर्णता है।ष राव का दूसरा उपन्यास, द सर्पेंट एंड द

रोप (1960), कथावाचक, एक युवा बौद्धिक ब्राह्मण और उसकी पत्नी का आत्मकथात्मक विवरण है जो भारत, फ्रांस और इंग्लैंड में आध्यात्मिक सत्य की तलाश कर रहा है। उपन्यास राव की पहली शादी और उसके विघटन को अपने विषय के रूप में लेता है। अधिक व्यापक रूप से, यह पूर्वी और पश्चिमी सांस्कृतिक परंपराओं के अंतर्संबंधों की जांच करता है, एक विषय जो उपन्यास की शैली द्वारा प्रबलित है, जो उन परंपराओं के कई साहित्यिक रूपों और ग्रंथों को एक साथ लाता है। द सर्पेंट एंड द रोप को व्यापक प्रशंसा मिली और कई आलोचकों ने इसे उनकी उत्कृष्ट कृति माना।

राव का रूपक उपन्यास द कैट एंड शेक्सपियररू ए टेल ऑफ इंडिया (1965), जो भारत पर आधारित है, द सर्पेंट एंड द रोप में जांचे गए विषयों को जारी रखता है और दिखाता है कि राव का काम तेजी से अमूर्त होता जा रहा है। कॉमरेड किरिलोव, द सर्पेंट एंड द रोप से पहले लिखा गया लेकिन 1976 में अंग्रेजी में प्रकाशित एक लघु उपन्यास, शीर्षक चरित्र के चित्र के माध्यम से साम्यवाद पर विचार करता है। द पुलिसमैन एंड द रोज (1978) ने उनकी पहले प्रकाशित कई लघुकथाएँ एकत्र कीं। राव का आखिरी उपन्यास, द चेसमास्टर एंड हिज मूव्स (1988), विभिन्न संस्कृतियों के पात्रों से भरा है जो अपनी पहचान तलाश रहे हैंय इसे समीक्षकों से अलग–अलग प्रतिक्रियाएँ मिलीं। जुड़ी हुई कहानियाँ ऑन द गंगा घाट (1989) में दिखाई देती हैं। राव के नॉनफिक्शन में निबंधों और भाषणों का संग्रह द मीनिंग ऑफ इंडिया (1996), और मोहनदास गांधी की जीवनी द ग्रेट इंडियन वे (1998) शामिल हैं।

राव को भारत के कई सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुएरू 1969 में पद्म भूषणय 1997 में भारत की राष्ट्रीय साहित्य अकादमी, साहित्य अकादमी में फेलोशिपय और पद्म विभूषण, 2007 में मरणोपरांत प्रदान किया गया। उन्होंने 1988 में न्यूस्टैड पुरस्कार भी जीता।

आधुनिक युग के अंग्रेजी के उपन्यासकार ‘बंकिम चंद चटर्जी’

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय (२७ जून १८३८ – ८ अप्रैल १८९४) बांग्ला भाषा के प्रख्यात उपन्यासकार, कवि, गद्यकार और पत्रकार थे। भारत का राष्ट्रगीत श्वन्दे मातरम्श उनकी ही रचना है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के काल में क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्रोत बन गया था। रबीन्द्रनाथ ठाकुर के पूर्ववर्ती बांग्ला साहित्यकारों में उनका अन्यतम स्थान है।

आधुनिक युग में बंगला साहित्य का उत्थान उन्नीसवीं सदी के मध्य से शुरु हुआ। इसमें राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, प्यारीचाँद मित्र, माइकल मधुसुदन दत्त, बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय और रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अग्रणी भूमिका निभायी। इसके पहले बंगाल के साहित्यकार बंगला की जगह संस्कृत या अंग्रेजी में लिखना पसन्द करते थे। बंगला साहित्य में जनमानस तक पैठ बनाने वालों मे शायद बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय पहले साहित्यकार थे।

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म उत्तरी चौबीस परगना के कंठालपाड़ा, नैहाटी में एक परंपरागत और समृद्ध बंगाली परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा हुगली कॉलेज और प्रेसीडेंसी कॉलेज में हुई। १८५७ में उन्होंने बीए पास किया। प्रेसीडेंसी कालेज से बी. ए. की उपाधि लेनेवाले ये पहले भारतीय थे। शिक्षासमाप्ति के तुरंत बाद डिप्टी मजिस्ट्रेट पद पर इनकी नियुक्ति हो गई। कुछ काल तक बंगाल सरकार के सचिव पद पर भी रहे। रायबहादुर और सी. आई. ई. की उपाधियाँ पाईं।

और १८६६ में कानून की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होने सरकारी नौकरी कर ली और १८६१ में सेवानिवृत्त हुए। ८ अप्रैल १८६४ को उनका निधन हुआ।

महर्षि अरविन्द ने उग्रवादी राष्ट्रवाद के विषय पर अपने निबन्ध "बंकिम तिलक दयानन्द" में कहा है कि आन्दोलन के कई प्रतिभागी उस कार्य संगठन से प्रेरित थे, जिसकी योजना बंकिम चंद्र ने अपने उपन्यास आनन्द मठ में बनाई थी। श्री अरविन्द बंकिम चंद्र के स्वतंत्रता के आदर्शों से गहराई से प्रेरित थे।उन्होंने बंकिमचंद्र को 'राष्ट्रवाद का पुजारी' कहा।

राष्ट्रवाद के विकास में बंकिम चंद्र का योगदान बहुत बड़ा है। उन्होंने श्रीकृष्ण के धर्मराज्य की स्थापना के बारे में अपना प्रसिद्ध निबंध 'कृष्णचरित्र' प्रकाशित किया। जब उनका संगीत 'वन्देदमातरम' पहली बार 1876 में 'बंगदर्शन' अखबार में प्रकाशित हुआ, तो भारत के लोग एक नए राष्ट्रवादी आवेग से प्रेरित थे।

अरविन्द घोष का विचार है कि बंकिमचंद्र ने हिंदू धर्म और राष्ट्रवादी आदर्शों के बीच एक अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया। इतिहासकार डॉ. राखलचंद्र नाथ ने कहा, ष्बंकिमचंद्र ईसाई पुजारी हस्ती साहिब के साथ धर्म के बारे में बहस के बाद हिंदू धर्म आंदोलन में शामिल हो गए।

हिन्दुओं के बारे में, बंकिमचंद्र ने एक बार इस प्रकार से शोक व्यक्त किया था, "कुमारसंभव को छोड़ दें, हम स्वाइनबर्न पढ़ते हैं, गीता को छोड़ कर मिल को पढ़ते हैं, उड़ीसा की पत्थर कला को छोड़ देते हैं और साहिबों की चीनी गुड़िया को देखते हैं।"

उनके श्आनन्दमठश, 'दुर्गशानंदिनी', 'सीताराम', 'धर्मतत्त्व', 'कमलकांता', 'राजसिंह' में देशभक्ति की भावना देखी जा सकती है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से आत्म–बलिदान का आदर्श और देशभक्ति का जो मंत्र प्रचारित किया, वह निस्संदेह एक महत्वपूर्ण घटना है।

अपनी रचना 'धर्मशास्त्र' में उन्होंने देशभक्ति को सभी धर्मों से ऊपर रखा। उन्होंने 'लोक रहस्य' पुस्तक में उदारवादियों के भीख मांगने पर व्यंग्य किया और देश को अपने पैरों पर खड़ा करने की बात कही। अपने निबंध 'अमर दुर्गोत्सव' में उन्होंने विधवा विवाह, महिलाओं की स्वतंत्रता के बारे में बात की और अंधी अंग्रेजी नकल का जोरदार विरोध किया। उन्होंने अपनी मातृभूमि को अपनी मां के रूप में देखा। इसीलिए हिरेन्द्रनाथ दत्त ने उन्हें 'भारतीय राष्ट्रवाद का असली जनकश कहा है। कई लोगों ने उन्हें उनकी देश सेवा और राजनीतिक ज्ञान के लिए 'राजनीतिक साधु' कहा है।

निष्कर्ष

आधुनिक भारतीय अंग्रेजी साहित्य के क्लासिक कामों की स्थिति हासिल की है, जो पीड़ितों के जीवन में उनकी समझदार अंतर्दृष्टि और गरीबी के उनके विश्लेषण, शोषण और दुर्भाग्य के विश्लेषण के लिए उल्लेखनीय हैं। वह अंग्रेजी में पंजाबी और हिंदुस्तान मुहावरे को शामिल करने वाले पहले लेखकों में से एक होने के लिए भी उल्लेखनीय है और पद्म भूषण के नागरिक सम्मान प्राप्तकर्ता थे। आधुनिक युग के प्रारंभिक दशकों में, अंग्रेजी उपन्यास महत्त्वपूर्ण उपन्यास लेखकों जैसे चार्ल्स डिकेंस, जेन ऑस्टिन, और भ्रम स्टोकर द्वारा लिखे गए उत्कृष्ट कामों के बारे में जाना जाता है। यह एक विडंबना है कि उन्होंने अपने परिवार की समस्याओं के कारण साहित्यिक कैरियर की शुरुआत की थी। उनका पहला निबंध उनकी चाची की आत्महत्या की प्रतिक्रिया से संबंधित था, जिसे उनके परिवार द्वारा मुसलमान के साथ भोजन साझा करने के कारण बहिष्कृत किया गया था। उनका पहला उपन्यास "अनटचेबल" वर्ष 1935 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने भारत की "अछूत" समस्या का बेबाक चित्रण किया था।

संदर्भ

1. ब्लॉक डी. और कैमरून डी.रू (2002) श्वैश्वीकरण और भाषा शिक्षण।श (लंदनरू रूटलेज,) पी.78
2. लिंडसे जैकरू (1965) श्द एलीफेंट एंड द लोटसश, ए स्टडी ऑफ द नॉवेल्स ऑफ मुल्क राज आनंद, (बॉम्बेरू कुतुब पॉपुलर,) पी.21।
3. आर.मजूमदार आर.सी. (सं.) रू (1969) ष्भारतीय इतिहास और संस्कृतिष
4. नाइक एम.के. रू (1980)_ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर', (नई दिल्लीरू साहित्य अकादमी), पृष्ठ 155
5. फोर्स्टर ई.एम.रू (1981) श्अछूत की प्रस्तावनाश, (1935य प्रतिनिधि। नई दिल्लीरू मे फेयर पेपरबैक्स,) पी.8इबिड। पी.एन. 59
6. आनंद मुल्कराज रू(1970)श्अछूतश, (नई दिल्लीरू ओरिएंट पेपरबैक्स,) पी.16।
7. बाटलीवाला श्रीलता रू (1993)_महिलाएं महिलाओं का विरोध क्यों करती हैं?'
8. आनंद मुल्कराज रू श्अछूतश, ऑप.सी.टी., पी.161श

9. वेंकटरेड्डी के., पी.बयापा रेड्डीरू (1999) श्इंडियन नॉवेल विद ए सोशल पर्पसश, (नई दिल्लीरू अटलांटिक पब्लिशर्स,) पी.33

10. आनंद मुल्कराज रू श्अछूतश, ऑप.सी.टी., पी.7इबिड, पी.87–88

11. आनंद मुल्कराज रू (1970) श्अछूत की प्रस्तावनाश, (नई दिल्लीरू ओरिएंट पेपरबैक्स,) पृ.8

12. मेहता पी.पी. रू (1979), श्इंडो–एंग्लिअन फिक्शनश एन असेसमेंटश (बरेलीरू पीबीडी,), पी.165

13. पॉल प्रेमिला रू (1983) श्द नॉवेल्स ऑफ मुल्क राज आनंदश, थीमैटिक स्टडीश, (नई दिल्लीरू स्टर्लिंग पब्लिशर्स,) पी.12

14. आनंद मुल्कराज रू श्अछूतश, ऑप.सी.टी., पी.131श

15. अयंगर के.आर.एस. रू (1984) श्इंडियन राइटिंग इन इंग्लिशश, (1962 तचज.नई दिल्लीरू स्टर्लिंग पब्लिशर्स,) च.339

16. रॉबर्टसन आर.टी. रू (1977) ष्अछूत के रूप में एक आदर्श उपन्यासष, काकतीय जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज, प्ए नंबर 1 (स्प्रिंग), च.7

17. नरसिंहैया सी.डी. रू (1969) श्द स्वान एंड द ईगलश, (शिमलारू इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज), पी.110। 88. विलियम्स हैडिन मूररू (1978) श्स्टडीज इन मॉडर्न इंडियन फिक्शन इन इंग्लिशश, खंड ए (कलकत्तारू राइटर्स वर्कशॉप), पी.33

18. शर्मा के.के. रू (1978) मुल्क राज आनंद पर परिप्रेक्ष्य के लिए श्परिचयश (गाजियाबादरू विमल प्रकाशन), पी.एक्सएक्सआई

19. नाथ सुरेशरू ष्मुल्क राज आनंद के फिक्शन में विरोध का तत्वष, मुल्क राज आनंद पर परिप्रेक्ष्य, एड। के.के.शर्मा, पी.131.